★ संकीर्तन ★

मेरो राधा रमण गिरधारी
गिरधारी श्याम वनवारी ॥

"सवैया"

टेड़े पिटारे कटारे किरिट की, माँग के पाग की धारी की जै जै ।
कुण्डल सोहे कपोलन पै, मुस्कान हूँ धीर प्रहारी की जै जै ॥
राजेश्वरी दिन रात रट्यौ, यही मोहन की वनवारी की जै जै ।
प्रेम ते बोलो बोलत डोलो, बोलौ श्री बाँके बिहारी की जै जै ॥

मेरो राधा रमण गिरधारी
गिरधारी श्याम वनवारी ॥

मन में है वसी बस चाह यही, प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करुँ ।
बिठला के तुम्हे मन मंदिर में, मन मोहिनी रूप निहारा करुँ ॥
भर के दृग पात्र में प्रेम का जल, पद पंकज नाथ पखारा करुँ ।
वन प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभु, नित आरती भव्य उतारा करुँ ॥

मेरो राधा रमण गिरधारी
गिरधारी श्याम वनवारी ॥

ब्रज भूमि जो प्रणों से प्यारी लगे, बृज मण्डल माहि वसाये रहो ।
रसिकन के संग में मस्त रहुँ, जगजाल से नाथ बचाये रहो ॥
नित बाकी ये झाँकी निहारा करु, छबि छक से मोहे छकाये रहो ।
ऐ हो बाँके बिहारी विनती यही, नित जैना से नैना मिलाये रहो ॥

मेरो राधा रमण गिरधारी
गिरधारी श्याम वनवारी ॥